International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(2): 171-173

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(2): 171-173
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 20-01-2017
Accepted: 24-02-2017

शालिनी सक्सेना
प्रोफेसर, राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
शालिनी सक्सेना
प्रोफेसर, राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

संस्कृत महाकाव्यों में महात्मा गाँधी विषयक कथानक

शालिनी सक्सेना

सारांश
भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के नायक महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व पर विभिन्न भाषाओं के साहित्य में बहुत कुछ लिखा गया है और लिखा जा रहा है। संस्कृत साहित्य भी कालक्रम एव उसके घ्टनाक्रमों से अछूता नहीं है और संस्कृत साहित्य में ऐसे अनेकानेक लेखक हुए है जो समसामयिक चरित्रों एवं घटनाओं पर अपनी लेखनी सेचमत्कृत साहित्य की सृष्टि करते हैं। संस्कृत साहित्य में भी ऐसे महाकवि हुए हैं जिन्होंने महात्मा गाँधी एवं उनके द्वारा कृत कार्यों को आधार बनाकर साहित्य सर्जना की है। यहाँ उसी का संक्षिप्त विवेचन करने का प्रयास किया गया है।

कूटशब्द : महात्मा गाँधी, प्राणाहुति, सत्याग्रह गीता, स्वराज्यविजय, श्रीमहात्मगान्धिचरितम्, श्री गाँधीचरितम्

प्रस्तावना
साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्यकारों को समाज से ही अपनी रचनात्मक प्रवृत्ति को गति देने के लिए सामग्री प्राप्त होती है, इसलिए साहित्यकार समकालीन परिस्थितियों एवं घटनाक्रम से अछूता नहीं रह पाता। यही कारण है कि किसी भी कालखण्ड के इतिहास को जानने के लिए उस कालखण्ड के साहित्य की समीक्षा अपेक्षित होती है। संस्कृत विद्वानों ने भी इस परम्परा को अक्षुण्ण रखा है। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का प्रभाव संस्कृत साहित्यकारों पर भी पड़ा और उन्होंने स्वतन्त्रता आन्दोलन एवं उसकी घटनाओं को लेकर साहित्य की विविध विधाओं में साहित्य सर्जना की है।

अर्वाचीन काल में महान् पुरुषों के जीवनचरित्र और स्वतन्त्रता आन्दोलन को लेकर संस्कृत भाषा में अनेकानेक साहित्यिक कृतियों का प्रणयन किया गया। इसका एक महत्त्वपूर्ण कारण उन कवियों एवं साहित्यकारों द्वारा स्वतन्त्रता आन्दोलन की घटनाओं का प्रत्यक्षदृष्टा होना भी रहा है। कई रचनाकार तो स्वयं स्वतन्त्रता आन्दोलन से सम्बद्ध रहे हैं। दासता के बन्धनों में ग्रसित भारत माता को दासतामुक्त करने के लिए जो लोग एवं संगठन कार्यरत थे, उनके प्रति अंग्रेजों के दमनात्मक रवैये से बुद्धिजीवी वर्ग बहुत दुःखी था। साहित्यकार अपना विरोध प्रदर्शन साहित्य के माध्यम से कर रहे थे तथा किंकर्त्तव्यविमूढ़ जनता को प्रेरित करने एवं उन्हें संगठित होकर स्वतन्त्रता के लिए प्रयासरत होने की प्रेरणा देने के लिए उन्होंने तत्कालीन आदर्श चरित्रों को अपनी लेखनी के माध्यम से एक नई दृष्टि से रेखांकित किया जिससे प्रेरणा प्राप्त कर आम जन भी स्वतन्त्रता आन्दोलन से जुड़ने लगे।

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में महात्मा गाँधी की महत्त्वपूर्ण भूमिका से कोई इन्कार नहीं कर सकता। उनके अहिंसात्मक आन्दोलन ने जन जन को स्वतन्त्रता संग्राम से जोड़ दिया। यद्यपि स्वतन्त्रता आन्दोलन में अनेकानेक महापुरुषों ने भाग लिया और अपनी प्राणाहुति दी। उनके योगदान पर भी अनेकानेक साहित्यिक ग्रन्थों का प्रणयन हुआ लेकिन सत्य एवं अहिंसा के माध्यम से जिस मार्ग का अनुसरण महात्मा गाँधी ने किया वह भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों के अनुरुप होने से सर्वजनप्रिय एवं सर्वग्राह्य था। उनके महान् योगदान के कारण ही उन्हें राष्ट्रपिता के महनीय विरुद से सम्मानित किया गया है। उनके प्रति कृतज्ञ राष्ट्र आज उनकी 150 वीं जयन्ती मना रहा है। इस अवसर पर संस्कृत साहित्य में उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को लेकर जो साहित्यिक कार्य हुआ और संस्कृत रचनाकारों ने साहित्य के माध्यम से उन्हें जो कृतज्ञ आदरांजलि प्रदान की वह भी उल्लेखनीय है। संस्कृत रचनाकारों ने महात्मा गाँधी के जीवन चरित पर साहित्य की हर विधा के माध्यम से प्रकाश डाला है।

यदि समग्र अर्वाचीन संस्कृत साहित्य पर प्रकाश डाले तो महात्मा गाँधी के जीवन चरित्र एवं विचारधारा पर महाकाव्य, खण्डकाव्य, नाट्यरचनाएं एवं गद्यकाव्य बहुतायत में प्राप्त होते हैं। संस्कृत कवियों ने उनके जीवन एवं व्यवहार के विभिन्न पक्षों पर अपनी काव्यकृतियों का प्रणयन किया है।

राजस्थान प्रदेश भी संस्कृत साहित्य के उन्नयन एवं विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देता आया है। यहाँ के राजवंशों, श्रेष्ठिवर्गों एवं सन्तों ने संस्कृत भाषा एवं साहित्य के प्रणयन एवं प्रचार प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। राजस्थान की राजधानी जयपुर तो 'अपराकाशी' के नाम से ही प्रसिद्ध है क्योंकि काशी के समान ही यहाँ के विद्वानों ने संस्कृत भाषा, साहित्य एवं शास्त्रों के प्रणयन में महती भूमिका का निर्वहन किया है। राजस्थान में संस्कृत महाकाव्यों की सुदीर्घ पम्परा रही है। बृहत्त्रयी के अन्तर्गत सम्मिलित महाकवि माघ से लेकर अर्वाचीन काल तक यह परम्परा अनवरत बनी हुई है। सम्पूर्ण देश की भाँति राजस्थान प्रान्त के लोगों ने भी स्वतन्त्रता आन्दोलन में बढ़चढ़कर भागीदारी निभाई थी और यहाँ के रचनाकारों ने भी स्वतन्त्रता सेनानियों के जीवनचरित्र पर अपनी रचनाओं का प्रणयन कर स्वतन्त्रता आन्दोलन में अपना योगदान दिया। देश के अन्य क्षेत्रों के विद्वानों के समान महात्मा गाँधी के जीवन पर भी अनेकानेक काव्यों की रचना हुई।

महात्मा गांधी पर विरचित महाकाव्यों में पण्डिता क्षमाराव कृत सत्याग्रह गीता, श्रीभगवदाचार्य कृत श्रीमहात्मगान्धिचरितम्, श्री शिवगोविन्द त्रिपाठी विरचित श्री गान्धिगौरवम् तथा साधुशरण मिश्र कृत श्री गान्धिचरितम् महत्त्वपूर्ण हैं।

पण्डिता क्षमाराव का जन्म संस्कृत परिवार में पूना में हुआ। कवयित्री ने संस्कृत, अंग्रेजी एवं मराठी भाषा में रचनाएं की है। आपने संस्कृत भाषा में 50 से अधिक ग्रन्थ लिखे हैं जिनमें से 12 कृतियां प्रकाशित हैं। इनके द्वारा रचित सत्याग्रह गीता तीन भागों में विभक्त हैः– सत्याग्रह गीता, उत्तरसत्याग्रह गीता एवं स्वराज्य विजय। सत्याग्रह में 18 सर्ग हैं, उत्तर सत्याग्रह में 47 सर्ग तथा स्वराज्य विजय में 54 सर्ग हैं। प्रथम भाग के कथानक में दक्षिण अफ्रिका की रंगभेद नीति के विरोध से लेकर दाण्डीयात्रा एवं विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तक की कथावस्तु को समाहित किया गया है। उत्तरसत्याग्रह गीता गाँधी जी की यरवदा जेल यात्रा से लेकर पाकिस्तान के निर्माण के सम्बन्ध में जिन्ना के साथ हुई वार्ता के बाद सेवाग्राम लौटकर उनके चौहत्तरवें जन्मदिवस तक के घटनाक्रम शामिल है। स्वराज्य विजय में स्वराज्य प्राप्ति को महत्त्वपूर्ण मानते हुए देशविभाजन का विरोध न करने की घटना से लेकर गाँधी जी की हत्या एवं राष्ट्र के प्रति गाँधी जी के आदर्शों को अपनाने के सन्देश तक का विवेचन किया गया है।

उक्त महाकाव्य महाकाव्यों के लक्षण के अनुसार मंगलाचरण से प्रारम्भ होता है। महाकाव्य का कथानक ऐतिहासिक घटनाओं पर आधृत है। कवयित्री स्वयं स्वतन्त्रता आन्दोलन से सम्बद्ध रहीं अतः उन्होंने घटनाओं को अधिक सजीव ढ़ंग से चित्रित किया है। उक्त महाकाव्य के नायक राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी हैं। जो सत्य, अहिंसा एवं सत्याग्रह के पथ के अनुगामी हैं। महाकाव्य में अधिकांशतः अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग किया है केवल एक स्थान पर मालिनी का प्रयोग हुआ है। महाकाव्य का अंगीरस वीर है तथा अन्य रसों में रौद्र, भयानक एवं करुण रस का ही संयोजन दिखाई देता है। कथावस्तु के अनुरुप अनुप्रास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यास, दृष्टान्त, विनोक्ति आदि अलंकारों का समुचित प्रयोग किया गया है। वर्ण्यविषय के अन्तर्गत प्राकृतिक चित्रण भी कथानक के अनुरुप सहज ही है। कहीं भी लक्षण की मांग को देखते हुए जबरदस्ती प्रकृति चित्रण नहीं हुआ है। प्रसंगवश सूर्य, चन्द्रमा अथवा साबरमती नदी का विवेचन किया गया है। कवयित्री ने यथास्थान पंच सन्धियों का प्रयोग किया है। महाकाव्य का उद्देश्य जन जन के मन में राष्ट्र के प्रति प्रेम जागृत करना है।

श्री महात्मगान्धिचरितम् के लेखक श्रीमद् भगवदाचार्य का जन्म पंजाब के स्यालकोट में हुआ। आपका वेद, दर्शन एवं साहित्य विषय पर समान अधिकार था। इनकी प्रकाशित अप्रकाशित काव्यकृतियों की संख्या 80 से भी अधिक है। श्री महात्मगान्धिचरितम् महाकाव्य के अतिरिक्त इनके द्वारा रचित गुजराती महाकाव्य, रामानन्ददिग्विजय महाकाव्य प्रमुख हैं। श्री महात्मगान्धिचरितम् महाकाव्य भारतपारिजातम्, पारिजातापहार, पारिजातसौरभम् इन तीन भागों में उपलब्ध होता है। तीनों भाग मिलकर श्री महात्मगान्धिचरितम् महाकाव्य कहलाते हैं। प्रथमभाग में 25 सर्ग, द्वितीय भाग में 29 सर्ग एवं अन्तिम भाग में 20 सर्ग हैं। महाकाव्य का प्रारम्भ आशीर्वादात्मक एवं वन्दनात्मक मंगलाचरण से हुआ है। कवि ने सर्वप्रथम जगदम्बा का स्मरण किया है। महाकाव्य का कथानक ऐतिहासिक होने के साथ साथ जीवनचरित्र पर भी आधृत है। कथानक का मूल आधार गाँधी जी की आत्मकथा एवं उनकी दिल्ली डायरी है।

गाँधी जी के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त की घटनाओं को महाकाव्य में समाहित किया गया है। महाकाव्य के नायक महात्मा गाँधी हैं। प्रतिनायक के रूप में तत्कालीन अंग्रेज शासक वर्ग का वर्णन किया गया है। महाकाव्य में विविध छन्दों का प्रयोग हुआ है। महाकाव्य की परम्परा अनुसार सर्ग के अन्त में छन्द परिवर्तन भी किया गया है। भारत पारिजातम् के प्रथम सर्ग में वंशस्थविल छन्द है और सर्गान्त में मालिनी छन्द है। सम्पूर्ण महाकाव्य में उपजाति, मंजुभाषिणी, अनुष्टुप्, मत्तमयूर, शिखरणी आदि छन्द प्रयुक्त हुए है। महाकाव्य का अंगीरस वीर रस है। इसके साथ रौद्र, वात्सल्य एवं बीभत्स आदि का प्रयोग भी कदाचित् देखने को मिलता है। अलंकारों के अन्तर्गत यमक, उपमा, रूपक, अनुप्रास, अतिशयोक्ति, अर्थान्तरन्यास आदि का प्रयोग बहुशः हुआ है। प्रसंगवश सूर्य, चन्द्रमा आदि के वर्णन के साथ ऋतुओं एवं उनके परिवर्तन के साथ अफ्रिका देश की नदियों एवं समुद्र का भी प्राकृतिक वर्णन किया गया है। महाकाव्य में यथास्थान पाँचों कार्यवस्थाओं एवं अर्थप्रकृतियों का समावेश है। महाकाव्य का उद्देश्य राष्ट्रभक्ति व देश प्रेम जागृत करना तथा मातृभूमि के प्रति आस्था जगाना है। इसके साथ ही गाँधी जी से स्वाभिमानी जीवन की प्रेरणा प्राप्त करना भी है।

श्री गान्धिगौरवम् महाकाव्य श्री शिवगोविन्द त्रिपाठी विरचित है। त्रिपाठी जी का जन्म उत्तरप्रदेश के हरदोई जनपद के सण्डीला नगर में हुआ। आप कर्मकाण्ड, ज्योतिष एवं आयुर्वेद के विद्वान् थे तथा वैद्यक कर्म से सम्बन्धित थे। आपने आयुर्वेद के साथ साथ संस्कृत का भी अध्ययन किया। आपके पुत्र डॉ0 शिवसागर त्रिपाठी राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में संस्कृत विषय के आचार्य रहे हैं। उन्होंने ही आपके श्रीगांधीगौरवम् महाकाव्य को अनुवाद सहित प्रकाशित किया है।

सम्पूर्ण महाकाव्य विवेचन की दृष्टि से आठ सर्गों में विभक्त है। उक्त महाकाव्य कुछ नये प्रयोगों के साथ प्रस्तुत किया गया है जिसमें बापू के जीवन तथा व्यक्तित्व सम्बन्धी प्रेरणादायी प्रसंगों में जीवनसन्देश खोजने का प्रयास किया गया है। इस काव्य की रचना गाँधी जी के जन्मशताब्दी वर्ष में हुई थी। महाकाव्य का प्रारम्भ गुरुवन्दना व सरस्वती देवी की स्तुति से हुआ है। महाकाव्य का कथानक गाँधी जी की आत्मकथा व श्रीभगवदाचार्य कृत श्रीमहात्मगान्धिचरितम् पर आधारित है। गाँधी जी के जन्म से स्वतन्त्रता प्राप्ति तक की घटनाओं का विवेचन महाकाव्य के अन्तर्गत हुआ है। नायक तो राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ही हैं। महाकाव्य में छन्दों का प्रयोग स्वतन्त्रता के साथ हुआ है। कवि के सर्वाधिक प्रिय छन्द अनुष्टुप्, इन्द्रवज्रा, उपजाति, मालिनी, शालिनी एवं वसन्ततिलका हैं। इनके साथ ही उपेन्दवज्रा, दोधकवृत्तम्, भुजंगप्रयातम्, शिखरणी, स्रग्धरा, वियोगिनी आदि छन्दों का प्रयोग भी दृष्टव्य है। छन्दों के वैविध्य की दृष्टि से यह महाकाव्य अन्य महाकाव्यों की तुलना में वैविध्यपूर्ण है। प्रधानरस वीर है। इसके अतिरिक्त करुण, रौद्र, वात्सल्य एवं भयानक रसों का भी सुन्दर परिपाक देखने को मिलता है। अलंकारों में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा अनुप्रास, अर्थान्तरन्यास, दृष्टान्त, स्वभावोक्ति, विशेषोक्ति एवं श्लेषालंकार का प्रयोग सुन्दर प्रतीत होता है। राष्ट्रप्रेम प्रमुख उद्देश्य होने से प्राकृतिक वर्णनों की न्यूनता है लेकिन एक स्थान पर जयपुर नगर का मनोहारी वर्णन हुआ है। कहीं कहीं सूर्योदय एवं सूर्यास्त का वर्णन भी प्राप्त होता है। सन्धियों का यथास्थान समावेश किया गया है। काव्यात्मक चमत्कारों में कवि का विशेष आग्रह दिखाई नहीं देता फिर भी काव्य में सरलता, संवेदनशीलता,सहज सप्रेषणता आदि के दर्शन होते हैं। कवि ने प्रचलित मुहावरों का संस्कृतीकरण किया है जिससे भाषा–सौष्ठव बढ़ा है। यत्र तत्र सूक्तियों अथवा उद्धरणों के प्रयोग से शैली में प्रौढ़ता आई है। महाकाव्य में नित्य व्यवहार में

आने वाले अन्य भाषाओं के शब्दों का प्रयोग यथावत् रूप में अथवा संस्कृतीकरण करके किया गया है। यद्यपि महाकाव्य में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का यथास्थान वर्णन हुआ है फिर भी सत्य, अहिंसा, अवज्ञा आन्दोलन, असहयोग आदि के द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्ति करना ही कवि का अभीष्ट है।

श्री गाँधीचरितम् महाकाव्य के रचयिता श्री साधुशरण मिश्र का जन्म बिहार में हुआ और आप नरकटियागंज स्थित जानकी संस्कृत विद्यालय के प्रधानाचार्य पद पर रहे। आपके द्वारा रचित श्री गान्धिचरितम् भी महात्मा गाँधी के जीवनचरित पर आधारित महाकाव्य है। उक्त महाकाव्य 19 सर्गों में निबद्ध है। महाकाव्य का प्रारम्भ विघ्नहर्ता गणेश जी की वनदना से हुआ है। कथानक का आधार महात्मा गाँधी जी की आत्मकथा है। महाकाव्य में गाँधी जी के जन्म से लेकर स्वतन्त्रता संग्राम में उनकी भूमिका एवं स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् गाँधी जी की मृत्यु तक की घटनाओं को काव्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है। महाकाव्य के नायक युगपुरुष महात्मा गाँधी हैं। छन्द प्रयोग में कवि ने स्वतन्त्रता बरती है और स्वेच्छया अनुष्टुप्, मालिनी, उपेन्द्रवज्रा, वसन्ततिलका, द्रुतविलम्बित, शार्दूलविक्रीड़ितम् वियोगिनी आदि का प्रयोग किया है। अन्य महाकाव्यों की भाँति प्रधान रस वीर है तथा रौद्र, भयानक, करुण एवं वात्सल्यादि रस प्रसंगवश यथास्थान वर्णित हुए हैं। प्राकृतिक वर्णन के अन्तर्गत गंगा, यमुना आदि नदियों के वर्णन के साथ सूर्योदय, चन्द्रोदय, चन्द्रास्त आदि के मनोरम दृश्यों का विवेचन महाकाव्य में हुआ है। यथा स्थान पंचसन्धियों का सन्निवेश हुआ है। महाकाव्य अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल रहा है और राष्ट्रप्रेम की भावना उत्पन्न करता है। इस महाकाव्य का प्रकाशन सन् 1952 में हुआ। एक अन्य महाकाव्य श्रीनिवास ताडपत्रीकर विरचित गाँधी गीता है। ताड़पत्रीकर दाक्षिणात्य महाकवि हैं। आपने भण्डारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना में रहते हुए संस्कृत भाषा की सेवा की। गांधी गीता में 24 सर्ग हैं। महाकाव्य के सम्बन्ध में अधिक कुछ ज्ञात नहीं हुआ है।

महाकाव्यों के अतिरिक्त भी महात्मा गाँधी पर गद्य पद्य शैली में अनेकानेक ग्रन्थों का प्रणयन हुआ है और आज भी हो रहा है। न केवल संस्कृत अपितु विश्व की अनेकानेक भाषाओं में गाँधी जी के जीवनचरित, उनकी विचारधारा, उनके राजनैतिक चिन्तन, दर्शन एवं राष्ट्र के प्रति उनकी सोच पर बहुत कुछ लिखा गया है और भविष्य के रचनाकर भी उनके जीवचरित से प्रेरणा प्राप्त कर साहित्य सर्जना करते रहेंगे। आज कृतज्ञ राष्ट्र उनकी 150वां जन्मशती वर्ष मना रहा है। आज भी उनके दिखाए मार्ग पर चल कर हम श्रेष्ठ राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। आज भी उनके सिद्धान्त व जीवन उतना ही अनुकरणीय व प्ररेणादायी है। चाहे अन्तोदय से सम्बन्धित कार्यक्रम हों, चाहे स्वरोजगार व लघु उद्योग की योजनाएं अथवा स्वच्छता अभियान हो गाँधी जी एवं उनके सिद्धान्तों का प्रभाव सर्वत्र दिखाई देता है।

संदर्भ

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास, बलदेव उपाध्याय
2. संस्कृत साहित्य का इतिहास डॉ. पुष्कारदत्त शर्मा
3. श्री गाँधीगौरवम्
4. श्री गाँधीचरित्
5. श्री महात्मगाँधीचरितम्